3

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय की भूमिका का एक अध्ययन

एकता मिश्रा*
शिल्पी कुमारी**

इस शोध में शोधार्थी द्वारा 'मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय में किस प्रकार के कार्य हो रहे हैं' को जानने का प्रयास किया गया है। इस शोध में न्यादर्श के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के नई तालिम के सिद्धांतों को लागू करने वाले आनंद निकेतन विद्यालय का अध्ययन किया गया और प्राथमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों का साक्षात्कार किया गया। शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श के माध्यम से किया गया। इस शोध अध्ययन में प्रदत्त के संकलन हेतु टेलिफोनिक साक्षात्कार किया गया एवं स्व-निर्मित अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। शिक्षकों के द्वारा लिखी गई चिंतनशील-दैनंदिनी का भी विश्लेषण किया गया। उक्त विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष बताते हैं कि आनंद निकेतन विद्यालय के शिक्षक किस प्रकार कक्षा में मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन में विद्यार्थियों की सहायता करते हैं। यह आलेख, अन्य विद्यालयों में किस प्रकार समावेशन लाया जाए इससे संबंधित एक नई दृष्टि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान समय में समाज में समानता लाने के लिए सबसे आवश्यक है कि बिना किसी शारीरिक, आर्थिक अथवा सामाजिक भेदभाव के सभी को समान शिक्षा के अवसर उपलब्ध मिलें जिससे बच्चों में समता-समानता के गुण स्वयं विकसित हो सकें तथा उनके माध्यम से समाज समानता की ओर अग्रसर हो सके। इसी आवश्यकता को देखते हुए शिक्षा जगत में समावेशी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की गई जिससे सामान्य विद्यार्थी तथा विशिष्ट विद्यार्थियों का भेद समाप्त हो सके तथा सभी विद्यार्थी एक ही विद्यालय में अपनी आवश्यकता के अनुरूप समान शिक्षा ग्रहण कर सकें।

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, डॉ भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली 110 015
***सहायक प्रध्यापिका*, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

पारिभाषिक शब्दावली

समावेशन

प्रस्तुत शोध में समावेशन का तात्पर्य हैं कि सभी तरह के विद्यार्थियों को शैक्षिक तंत्र में विभिन्न परिवर्तनों द्वारा विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर को प्राप्त करना।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध में उन विद्यार्थियो को मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों की श्रेणी में रखा गया हैं जो सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में मंदगति से सीखते हैं, परंतु उन्हें उपचारात्मक कक्षा के माध्यम से सामान्य विद्यार्थियों के स्तर पर लाया जा सकता हैं।

आनंद निकेतन

आनंद निकेतन एक ऐसा विद्यालय हैं जो गाँधी जी के विचारों पर आधारित है, जहाँ किसी तरह का भेदभाव देखने को नहीं मिलता है। सभी के लिए एक समान नियम है।

नई तालीम एवं समावेशी शिक्षा

नई तालीम विद्यालय परियोजना स्वयं अत्यंत महत्वपूर्ण व बहुमूल्य है। इसे 'वर्धा शिक्षा योजना', 'नई तालीम', 'आनंद निकेतन' 'बुनियादी तालीम' तथा 'बेसिक शिक्षा' के नामों से जाना जाता है। गाँधी जी ने 23 अक्तूबर, 1937 को नई तालीम की बुनियाद रखी। शुरुआत में नई तालीम का विरोध भी हुआ। नई तालीम राष्ट्रीय सभ्यता और संस्कृति के नज़दीक थी, साथ ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी हुई थी। व्यक्ति आधारभूत शिक्षा के द्वारा अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था। इसमें शिल्प, कृषि, कताई, बुनाई, बागबानी, मिट्टी का काम, खेती का काम, फल-सब्ज़ी लगाना, बालिकाओं हेतु गृह विज्ञान तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षाप्रद हस्तशिल्प और इसके अलावा मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं सामान्य विज्ञान, कला, हिंदी आदि विषय की शिक्षणविधि को व्यावहारिक रखा गया। सामान्य विद्यार्थी हो या मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थी कोई भी शिक्षा से वंचित ना रहे, इसलिए ऐसा पाठ्यक्रम चलाया गया जिससे सबकी सहायता की जा सके। बुनियादी तालीम आनंद निकेतन समाज और व्यावहारिक जीवन से जुड़ी है जो अन्य विद्यालयों की अपेक्षा पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक तथा रोज़गारपरक शिक्षा का पाठ पढ़ाता है जिससे ना केवल सामान्य विद्यार्थी अपितु मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों का भी विकास हो सके। समावेशी शिक्षा के निर्माण के लिए समावेशी कक्षा आवश्यक है, जिसके लिए सबसे ज़्यादा सामाजिक, आर्थिक तथा शारीरिक रूप से कमज़ोर व्यक्तियों पर ध्यान देना ज़रूरी है। इस प्रकार का समावेशन समावेशी शिक्षा द्वारा ही हासिल किया जा सकता है। नई तालीम शिक्षा पद्धति उत्पादक कार्य को केंद्र में रखकर शिक्षा के क्रियान्वयन पर बल देती है जो सर्वोदय विचार की मान्यता से संबंधित है (मिश्रा, 2017)। महात्मा गाँधी ने नई तालिम को अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन बताया है। नई तालिम के सिद्धांत पर संचालित आनंद निकेतन विद्यालय की पढ़ाई बच्चों को तनाव मुक्त करती है। यहाँ सीखना ज्ञान प्राप्ति के लिए नही, बल्कि अपने अनुभवों, जीवन और समाज के अन्वेषण और उसे बेहतर बनाने के लिए है। अपनी ताकत को जानना,

दूसरों की ताकत की सराहना करना और दोनों के संयोजन से बेहतर प्रदर्शन करना यहाँ के बच्चों और शिक्षकों के व्यवहार में देखा जा सकता हैं जो उन्हें समावेशीय समाज निर्मित करने की ओर अग्रसर करता है।

शोध प्रश्न

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय का कक्षा वातावरण किस प्रकार सहायक है?

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय की शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया किस प्रकार प्रभावी है?

आनंद निकेतन विद्यालय में प्रयुक्त आकलन रणनीतियाँ मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के अधिगम प्रगति के आकलन में किस प्रकार प्रभावी है?

शोध उद्देश्य

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय का कक्षा वातावरण का अध्ययन करना।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के समावेशन में प्रयुक्त अधिगम रणनीतियों का अध्ययन करना।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों की अधिगम प्रगति के आकलन हेतु आनंद निकेतन विद्यालय में प्रयुक्त आकलन रणनीतियों का अध्ययन करना।

न्यायदर्श

यह शोध आनंद निकेतन (वर्धा, महाराष्ट्र) में किया गया। विद्यार्थियों के चयन हेतु सर्वप्रथम शिक्षकों से बात की गई तथा जिन बच्चों का अकादमिक प्रदर्शन सामान्य से कम था, जिन्हें केवल उपचारात्मक कक्षा तथा सहयोग के माध्यम से सामान्य विद्यार्थियों के स्तर पर लाया जा सकता था, उन्हीं विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध उपकरण एवं तकनीक

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संग्रहण हेतु उपकरण एवं तकनीकी के रूप में अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार-अनुसूची एवं टेलीफोनिक साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया गया। मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में विद्यालय के कक्षा वातावरण, शिक्षा-अधिगम प्रक्रिया तथा आकलन की प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए टेलीफोन के माध्यम से प्रतिदर्श में सम्मिलित शिक्षकों के साथ अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य यह था कि शिक्षकों से ज़्यादा प्रतिक्रिया मिल सके, क्योंकि अर्ध-संरचित साक्षातकार अनुसूची में प्रश्नों की एक निश्चित श्रृंखला की जगह अनिश्चित प्रश्न होते हैं जिसमें शिक्षकों से पूछने वाले प्रश्नों में फेर बदल किया जा सकता है (कोरोना महामारी के चलते घर पर ही रहकर संचालित की गई)। साथ ही इन शिक्षकों द्वारा लिखी जाने वाली चिंतनशील दैनंदिनी को आँकड़ों के एक महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में सम्मिलित किया गया। इससे शोधकर्ता को उपर्युक्त के संबंध में शिक्षकों के अनुभवों को और गहराई से जानने का अवसर प्राप्त हो सका। चिंतनशील दैनंदिनी के विश्लेषण के लिए विषयवस्तु विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया।

प्रद्त्तों का विश्लेषण एवं विवेचना

प्रस्तुत शोध में मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए आनंद निकेतन विद्यालय किस प्रकार उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में उनकी सहायता करता है, उसका विश्लेषण किया गया जिसमें विद्यालय के कक्षा वातावरण, प्रयुक्त अधिगम एवं आकलन रणनीतियों का अध्ययन किया गया।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के समावेशन के संदर्भ में आनंद निकेतन विद्यालय का कक्षा वातावरण

आनंद निकेतन विद्यालय का वातावरण एक सहयोगात्मक अधिगम वातावरण है, जिसमें सभी विद्यार्थी एवं शिक्षक स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर सीखते-सिखाते हैं। इस प्रक्रिया में जो विद्यार्थी मंदगति से सीखते हैं, वे भी अन्य विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की सहायता से सामान्य विद्यार्थियों की तरह सीख पाते हैं।

उनका समूह बनाकर उन्हें सिखाने तथा समझाने की कोशिश की जाती है। कक्षा का वातावरण एक पारिवारिक वातावरण होता है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की सहायता की जाती है। जिसके लिए विद्यार्थी सभी एक साथ गोलाकार समूह में बैठते हैं एवं उनके समुह में शिक्षक भी रहते हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थियों की सहायता करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की योग्यताओं के अनुसार समूह का निर्माण कराते हैं, जैसे— जो विद्यार्थी कमज़ोर होते हैं उनके साथ दो तीव्र बुद्धि वाले विद्यार्थियों को रखा जाता है। जिसमें 3 स्तर के विद्यार्थी होते हैं जैसे— एक मंद तथा दो तीव्र बुद्धि वाले विद्यार्थी और वे एक दूसरे के सहयोग से सीखते हैं। यदि शिक्षक-विद्यार्थी संबंध की बात करें तो आनंद निकेतन विद्यालय एक परिवार है। इसमें हर कोई सीखने आया है, वह शिक्षक हो या विद्यार्थी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। आनंद निकेतन विद्यालय के शिक्षक केवल एक शिक्षक नही वह भाई, दोस्त, माता-पिता, किसान, कामगार, कलाकार होकर भी शिक्षक हो सकता हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को उनके जीवन के अनुभव से जोड़कर सिखाते हैं, जिससे शिक्षण प्रक्रिया और प्रभावशाली बन सके एवं विद्यार्थी शिक्षा का दैनिक जीवन में क्या महत्व है इसके मायने समझ सकें। शिक्षा का काम केवल जीवन को गति देना ही नही, बल्कि शिक्षा तो जीवन जीने की कला है ऐसा वहाँ के शिक्षकों का मानना हैं जिसके माध्यम से वे एक समावेशी माहौल तैयार करने की कोशिश करते हैं।

आनंद निकेतन के शिक्षकों से वार्तालाप करने के पश्चात आनंद निकेतन विद्यालय के बारे में और जानने-समझने का मौका मिला। आनंद निकेतन जीवन जीने की एक पद्धति है जिसकी संकल्पना गाँधी जी ने की थी। गाँधी जी ने भारतीय शिक्षा के विकास के लिए बुनियादी शिक्षा पद्धति का विकास किया।

आनंद निकेतन विद्यालय में मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियो के लिए एक समूह का निर्माण किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता (मानसिक क्षमता का आशय है जो विद्यार्थी कक्षा में कम या ज़्यादा क्रियाकलाप करते हैं) के अनुसार उन्हें कक्षा में बैठाते हैं। जो विद्यार्थी कम बोलते हैं या कक्षा में कम अनुक्रिया करते है उन्हें आगे बैठाते हैं तथा कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक हफ्ते

आगे वाले विद्यार्थी पीछे तथा एक हफ्ते पीछे वाले विद्यार्थी आगे बैठते हैं, जिससे सभी विद्यार्थी एक दूसरे से परिचित हो सकें और मिल-जुलकर रहना सीख सकें। शिक्षक भी सभी विद्यार्थियों पर पूरा ध्यान देते हैं। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य यह है कि कक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलें, जिससे विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों का समावेश हो इस प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों में सक्रियता बनी रहती है।

आनंद निकेतन विद्यालय में बच्चों की योग्यता-क्षमता को ध्यान में रखते हुए समूह का निर्माण करते हैं। एक समूह में तीन से चार विद्यार्थियों को रखा जाता है, जिसमें दो विद्यार्थी तीव्र मानसिक योग्यता वाले तथा एक विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता वाले होते हैं। समूह के माध्यम से विद्यार्थी ज़्यादा अच्छी तरह सीखते हैं तथा जो विद्यार्थी अकेले नहीं बोल पाते हैं वे भी समूह में ज़्यादा सक्रिय दिखते हैं। आनंद निकेतन विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को सक्रिय रखने के लिए इस प्रकार के समूह का निर्माण किया जाता है जिसके माध्यम से सभी विद्यार्थी अपनी सहभागिता दे पाते हैं। विद्यालय का उद्देश्य यह भी है कि कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी सहयोगात्मक अधिगम के माध्यम से सीखे।

नई तालीम विद्यालय में शिक्षक तथा विद्यार्थियों के मध्य एक पारिवारिक संबंध जैसा रिश्ता है। यहाँ विद्यार्थी शिक्षकों को ताई (बड़ी बहन) और दादा (बड़ा भाई) कहकर बुलाते हैं जिससे अपनत्व का भाव बना रहता है। उनके समक्ष जब किसी भी प्रकार की कोई समस्या आती है तो वे शिक्षकों के समक्ष खुलकर अपनी बात रखते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि एक विद्यार्थी के पास फीस भरने को पैसे नहीं थे तब उसने शिक्षकों को अपनी समस्या बताई और विद्यालय ने उस विद्यार्थी का पूर्ण सहयोग किया। विद्यालय 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धांत को मानता है, जहाँ छोटा बड़ा कोई नहीं होता सभी एक समान हैं, सभी बच्चे सीखने आए हैं।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समावेशन हेतु आनंद निकेतन विद्यालय में प्रयुक्त अधिगम रणनीतियाँ

दूसरे उद्देश्य के विषयों कि यदि बात की जाए तो आनंद निकेतन विद्यालय में अनुशासन व्यवस्था नियम आदि का प्रावधान नहीं है। विद्यार्थी अनुकरण के माध्यम से एक-दूसरे को देखकर सीखते हैं। जब कोई नया विद्यार्थी विद्यालय में प्रवेश लेता है तो यहाँ के पुराने विद्यार्थी ही उसे नियम अनुशासन बताते हैं और धीरे-धीरे अनुकरण के माध्यम से सभी विद्यार्थी विद्यालय के नियम को सीखते हैं। नई तालीम विद्यालय में प्रत्येक विषय को गतिविधियों के माध्यम से ही सिखाया जाता हैं। मातृभाषा की यदि बात की जाए तो नई तालीम विद्यालय, ऐसा विद्यालय है जहाँ विद्यार्थी मातृभाषा में सीखते हैं। नई तालीम विद्यालय में ना हीं शिक्षकों पर किसी प्रकार का दबाव रहता है और ना ही विद्यार्थियों पर किसी प्रकार का कोई दबाव रहता है। शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी सुविधा अनुसार सिखाते हैं, बताते हैं, समझाते हैं तथा गतिविधि में सम्मिलित करते हैं।

आनंद निकेतन विद्यालय में विद्यार्थी स्वयं अनुशासन बनाते हैं, उन्हें सीखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वे एक दूसरे को देखकर अनुशासन

में रहना सीख लेते हैं। कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि यदि कोई विद्यार्थी प्रार्थना सभा में देरी से आया तो उसको पता होता है कि उसने गलती की है वो बिना कुछ कहे अपने आप ही अलग लाइन में खड़ा हो जाता है। इसमें किसी शिक्षक को बताने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि आप देर से आए हैं तो अलग लाइन लगाएँ। विद्यार्थी अपने आप ही ऐसे नियम का निर्माण करते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि जो मानसिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थी होते हैं उन्हें विद्यालय के नियम का ज़्यादा पता नहीं चल पाता है। तब सामान्य विद्यार्थी विद्यालय के नियम अनुशासन को सीखने में उनकी सहायता करते हैं। इसमें सामान्य विद्यार्थी की भी सहभागिता होती है।

आनंद निकेतन विद्यालय में पाठ-योजना का कोई निश्चित प्रारूप नहीं है। वहाँ की पाठ्यचर्या का लचीला होना ही विद्यालय की विशेषता है। शिक्षकों को जो विषय पढ़ाना होता है उसके कुछ बिंदुओं को अपने नोटबुक में लिख लेते हैं तथा उस विषय को एक दिन पहले स्वयं ही अच्छी तरह से पढ़ लेते एवं किस गतिविधि को विषय के साथ जोड़ना है यह भी सोच कर आते हैं फिर कक्षा में पढ़ाने जाते हैं एवं पाठ की समाप्ति के बाद विद्यार्थियों से उनकी प्रतिक्रिया लेते हैं जिससे शिक्षकों को यह पता चल जाता है कि विद्यार्थियों ने कितना सीखा। जो विद्यार्थी कक्षा में नहीं सीख पाते तो उनके लिए सहयोगी कक्षा की व्यवस्था होती है, ऐसे विद्यार्थियों को अलग से बताते हैं। आनंद निकेतन विद्यालय में विद्यार्थियों के अनुसार उनको बताने की कोशिश की जाती हैं। वैकल्पिक कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

आनंद निकेतन विद्यालय में अधिकतर कक्षाएँ गतिविधि आधारित होती हैं। शिक्षक ओडियो-वीडियो का ज़्यादा प्रयोग नहीं करते हैं, क्योंकि वहाँ के शिक्षकों का ऐसा मानना है कि ये सभी एक प्रकार की कृत्रिम वस्तुए हैं जिससे केवल एक कृत्रिम ज्ञान का ही निर्माण होगा, इसलिए यहाँ गतिविधि के लिए प्रकृति को आधार बना कर कक्षा-कक्ष का निर्माण किया जाता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान का सृजन स्वयं करें। गतिविधि आधारित कक्षा में कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थियों का समावेशन होता है। इस प्रकार की कक्षा में मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों की भी सक्रिय भूमिका देखने को मिलती है। आनंद निकेतन में भाषा संबंधित किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं आती, क्योंकि सभी विद्यार्थी स्थानीय ही हैं। उनकी भाषा मराठी है जिसके कारण किसी प्रकार की कोई समस्या नही देखी गई।

मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समावेशन हेतु आनंद निकेतन विद्यालय में प्रयुक्त आकलन रणनीतियाँ

आनंद निकेतन विद्यालय ऐसा विद्यालय है जहाँ विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रश्न पत्र का निर्माण किया जाता है। शिक्षक जो विद्यार्थियों को कक्षा में पढ़ाते हैं उसी के आधार पर प्रश्न पत्र भी बनाया जाता है, अधिकतर प्रश्न व्यावहारिक रूप में होते हैं। जो विद्यार्थी मंदगति से लिखते व समझते हैं, उन्हें शिक्षक प्रश्नों को पढ़कर समझाते हैं तथा उन्हें अतिरिक्त समय भी प्रदान किए जाने का प्रावधान है। यदि मूल्यांकन प्रणाली की बात

की जाए तो इसमें विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यवहार के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

आनंद निकेतन विद्यालय में प्रथम, द्वितीय, तृतीय कक्षा देने जैसी कोई व्यवस्था नहीं है। वहाँ सभी विद्यार्थियों को पास कर दिया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में किसी प्रकार का भेदभाव न उत्पन्न हो सके।

शोधार्थी द्वारा शिक्षकों से साक्षात्कार करने एवं शिक्षकों द्वारा शिक्षण दैनंदिनी, विद्यालय अवलोकन के आधार पर इन सभी विषयो के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

विवेचना

आनंद निकेतन विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है जो प्रकृति के साथ रहकर शिक्षा की बात करता है, जिसके माध्यम से सभी का समग्र विकास हो सके (मिश्रा, 2017)। इसी तरह का कुछ परिणाम हमारे शोध में भी देखने को मिला है। जहाँ शिक्षकों के साक्षात्कार के समय इस बात का उल्लेख किया गया है कि आनंद निकेतन विद्यालय शिक्षा को प्रकृति के साथ जोड़कर सीखने की बात करता है। प्राकृतिक पर्यावरण के साथ जुड़कर सीखने का लक्ष्य जीवन की संस्कृति में फलित होता है, जो हमारे शोध के परिणाम में भी देखने को मिला एवं शिक्षकों ने बताया कि किस प्रकार हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग कर कक्षा का संचालन करते हैं और विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं। शिक्षकों ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि कक्षा में हम इस प्रकार का वातावरण बनाते हैं जिसमें सामान्य विद्यार्थियों के साथ-साथ मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थी भी अपनी भागीदारी बराबर दे पाएँ। कांडपाल (2012) ने शिक्षा में समावेशन की चुनौती एवं समाधान नामक लेख में बताया कि विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों का नकारात्मक नजरिया समावेशन में एक बाधक का कार्य करता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो यह उनके शिक्षण प्रक्रिया में रुकावट उत्पन्न करता है इसलिए ज़रूरी है कि सर्वप्रथम शिक्षक अपनी कक्षा में विशेष विद्यार्थियों के प्रति अभिव्यक्ति को सकारात्मक बनाएँ। इसी प्रकार शोधार्थी ने अपने परिणाम में पाया कि नई तालीम आधारित विद्यालय में समावेशन के प्रति एक दूसरे का सहयोग मिलता है। वहाँ के शिक्षकों से साक्षात्कार के दौरान हमें यह पता चला कि विद्यालय में विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। किसी भी विद्यार्थी के प्रति ऊँच-नीच भेदभाव की भावना नहीं आने देते हैं। विद्यार्थियों से जुड़ने के लिए उनका नाम लेकर पुकारना साथ ही मात्रभाषा में शिक्षण एवं समूह शिक्षण करवाया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम में बताया गया कि किस तरह आनंद निकेतन विद्यालय में शिक्षणशास्त्र को रुचिकर बनाने के लिए समूह चर्चा, समूह गतिविधि तथा शिक्षण के दौरान मातृभाषा का प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने की कोशिश की गई कि आनंद निकेतन विद्यालय में समावेशन को लेकर किस प्रकार के कार्य किए जाते हैं। शोधार्थी ने पाया कि आनंद निकेतन में गतिविधियाँ, शिक्षण

प्रक्रिया में प्रयोग के माध्यम से विद्यालय में कक्षा वातावरण को एक समावेशी कक्षा के अनुसार बनाने की कोशिश की जा रही हैं। आनंद निकेतन में केवल लिखित परीक्षा के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन नहीं किया जाता, अपितु गतिविधि को भी परीक्षा का मुख्य केंद्र माना जाता है। आनंद निकेतन के शिक्षकों ने बताया कि कक्षा में बैठने की व्यवस्था होती है गोलाकार जिससे शिक्षकों की नज़र प्रत्येक विद्यार्थियों पर हो और उसी समूह में शिक्षक भी विद्यार्थियों के समान बैठते हैं। उनके लिए किसी प्रकार की विशेष बैठने की व्यवस्था नहीं कराई जाती है। नई तालिम विद्यालय अनुभविक ज्ञान पर ज़्यादा बल देता है जो सामाजिक दर्शन व्यक्ति और समाज की पारस्परिकता को मज़बूत करता है। यह केवल व्यक्तिगत विकास और हित को नही मानता, बल्कि समुदाय के साथ सहजीवन के उद्देश्य को बल देता है (मिश्रा, 2018)। प्रस्तुत आलेख एवं शोध में प्राप्त परिणाम से यह बात भी सिद्ध हुई है कि किस तरह शिक्षक एवं विद्यार्थी विद्यालय के संपूर्ण विद्यार्थियों के सहयोग से एक समावेशी वातावरण का सृजन करते हैं। समावेशन के माध्यम से मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों को भी सामान्य विद्यार्थियों के स्तर पर लाया जा सकता हैं। आनंद निकेतन विद्यालय में शिक्षण के साथ गतिविधि को जोड़कर सिखाना जिससे विद्यार्थियों में हस्तशिल्प कौशल का विकास किया जाता है जिसकी चर्चा शोध के परिणाम में विस्तारपूर्वक की जा चुकी है, जो कि सामान्य विद्यालय को एक नई अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी कहा है कि, "शिक्षा, सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एकमात्र और सबसे प्रभावी साधन है"। यह नीति इस बात की पुष्टि करती है कि स्कूल शिक्षा में पहुँच, सहभागिता और अधिगम परिणामों में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को दूर करना सभी शिक्षा क्षेत्र के विकास कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य होगा।

संदर्भ

काण्डपाल, के. 2014. अध्यापकों द्वारा कक्षा-कक्ष में समावेशीय वातावरणा सृजन न कर पाने की एक समस्या एक क्रियात्मक शोध. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

त्यागी, जी. 2018. *समावेशी शिक्षा*. शिव विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

मंगल, एस.के. 2019. *व्यावहारिक विज्ञान में अनुसंधान विधियाँ,* पी.एच.एल. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.

भारती. 2014. समावेशी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सेवापूर्ण विशेष आवश्यकता शिक्षक प्रशिक्षण की सार्थकता. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

मदान, ए. 2014 समावेश ही आगे बढ़ने का मार्ग है. *लर्निंग कर्व*. पृ.सं. 2. अज़ीम प्रेम जी यूनिवर्सिटी समावेशी शिक्षा.

मालवीय, आर. 2018. *समावेशी शिक्षा*. पृ.सं. 9. शारदा पब्लिकेशन, दिल्ली.

मिश्रा, आर.के. 2017 प्रकृति के साथ सहजीवन की शिक्षा. *परिप्रेक्ष्य*. अंक 3. नीपा, दिल्ली

———. 2018. नई तालिम उपेक्षित विरासत और संभावना का बीज. *शिक्षा विमर्श*. जयपुर.

सिंह, ए.के. 2017. *मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. मोती लाल बनारसी दास, नई दिल्ली.